खेती अपनी संस्कृति

सामग्रिकसूची :

- परिचय
- भारत की सँस्कृती और खेती
- खेती और आधुनिक भारत
- खेती क्यूँ खायब हो रहा हैं ?
- खेती और स्वास्थ्य
- युवकों की भूमिका - हम क्या कर सकते हैं?
- निष्कर्ष

परिचय :

"माता भूमिः पुत्रोऽयम प्रथ्वीम"

[अथर्ववेद: 12:1]

यह वाक्य हमारे देश के और हमारी संस्कृति की एक महत्वपूर्ण वेद

से लिया गया है। भारत हमारा देश एक ऐसा देश है जिसकी संस्कृती पूरी दुनिया में मशहूर है। और इस देश की एक अविभाजिक हिस्सा है खेती। खेती को हमारा अपनी सस्कृती हि कहता है। पौराणिक भारत में खेती को इतना प्रधान मानता था कि पौराणिक काल में सब खेती से हि जुड़ा होता था। यहीं तक की हमारी वेशभूषा, खाना, पीना सब खेती से जुड़ा होता था। लेकिन आज खेती का महत्व कम होती जा रही है। जिस भारत की सस्कृति सबसे अधिक खेती से जुड़ा होता है उसी भारत ने खेती को और खेती करनेवालों को यानि की किसानों को भूल रहा है। यह हमारी बदलते हुए समाज के एक प्रधान समस्य भी है। आज भारत के बच्चे खेती को किसि बुरे काम के नज़र से देखता है। ऐसे में

हमारे खेती का महत्व समझना और समझाना भी ज़रूरी है।

भारत की संस्कृति और खेती

हमारा भारत एक ऐसा देश जिसकी संस्कृति सारी दुनिया में मशहूर है और कई पश्चिमी देश हमारी संस्कृति को एक पुस्तक की तरह मानती है जिनसे उन लोगों को पढ़ने के लिए कुछ ज्यादा चीज मिले। इसमें सबसे ज़रूरी है खेती कई देश आज भी भारत के कृषिरीति के अनुसार अपने देश में खेती करता है। भारत की संस्कृति भी ~~खेती~~ खेती, पेड़, फूल, औषधि आदी चीज़ों के बारे में बहुत ज्ञानप्रद्यायक है। वृक्षायुर्वेद से लेकर महाभारत तक, शतपतब्रह्मण से लेकर तैत्तिरिसंहिता तक - इन सबमें ग्रन्थों में

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 645 Participant Code: 330

खेती और वृक्ष के महत्व के बारे में लिखा है।

"दशकूपसमा: वापी। दशवापीसमो ह्रद
दशह्रदसमो पुत्र। दशपुत्रसमो द्रुम:।
[वृक्षायुर्वेद:]।

यह वृक्षायुर्वेद में लिखी गयी एक श्लोक है। इसका मतलब यह है कि एक पेड़ दस पुत्रों के समान है यानि कि दस बच्चे आपके लिए क्या क्या कर सकते हैं वह सिर्फ एक पेड कर सकता है। इतना अहम मानती थी भारत की संस्कृति खेती को। हमारे समाज में जो भी त्योहार होती थी वह भी खेती से जुड़ी होती थी। इसका प्रथम उदाहरण है केरल की त्योहार 'ओणम्'। ओणम के त्योहार भी खेती से जुडा होता था। लेकिन आज हमारे समाज इतना बदल चुका है कि ओणम् ~~औरजैसेआदि~~ त्योहार सिर्फ एक

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

त्योहार बन चुका है। अब न इस त्योहार खेती कोई संबंध न संस्कृति से।

पौराणिक काल में लोग ~~बैल से~~ खेती करता था और अपने कमाई के खाने खाते थे। वह अपनी संस्कृती और खेती को अपने साथ जुडे रखते थे। वह लोग अपने हि खेत से मिलि चीज़ों का इस्तेमाल करके खाना बनाता था और अपने सादगी के जीवन चलाता था। आर्यन वर्ग के लोग हमारे भारत में आया और उन लोगों ने हमारी सारे नदी के तट पर खेती करना शुरू किया थी। यही से होते है भारत और खेती बीच का संबंध के शुरुआत। आज तक इस खेती संबंध को कोई टूट न सका। पर इस आधुनिक समाज के तरफ अगर हम

आज देखें तो क्या हम कह सकते हैं कि खेती और संस्कृति को कोई खतरा नहीं? यह एक चिंता की बात है।

खेती और आधुनिक समाज

अगर हमें खेती और आधुनिक समाज के बारे में जानना है तो सबसे पहले खेती और पाषाणिक समाज के बारे में जानना होगा। पाषाणिक समाज मेरा मतलब है कि करीब 45000 साल पहले जब पहली बार मानव ने खेती का आरंभ किया था। उस समय मानव अपने जीवन को संपूर्ण बनाने के लिए खेती की शुरुआत की थी। वह मानव जो उस समय तक सिर्फ कच्चा फल और मांस खाया था उनके लिए पौधे उगाना और चावल खाना एक

नया अनुभव था जो वह लोग बहुत पसंद करते थे। उस पसंद के कारण वह अपना घर किसी नदी के पास बनाया और जीना शुरू किया। इसका मतलब है कि आज के जो समाज में हम जी रहा है वह खेती के कारण ही शुरू हुआ था। और फिर कालांतर में वह छोटा समाज बड़ा हो गया और आज जो समाज वहीं तक पहुँच गया। पौराणिक लोग खेती को - किसके के कारण उन लोगों का जीना आसान हो गया उसको एक भगवान के तरह मानता था।

"भगवान वह है जो हमें जीने के लिए मदद करता है"

वेद में लिखे इन वाक्य के अनुसार हमें जीने के लिए जो भी लोग मदद करता है वह भगवान है। और हमें जीवन में सबसे ज्यादा मदद खेती देता है और

खेती हि सबसे बड़ा भगवान है।" वह लोग ऐसा मानता था। लेकिन क्या आज भी खेती और किसान भगवान है? इसका जवाब होगा नहीं आज के समाज में खेती को एक अन्य काम के तरह देखा जाता है जो हम आज तक नहीं चला हो और किसानों को किसि गुणकारों की तरह। आज हम सब लोग अगर किसि से जाकर पूछे किसि बच्चे से जाकर पूछे कि तुम्हें बड़े होकर क्या बनना है तो इसका जवाब होगा डॉक्टर, इन्जीनीयर किसि का भी जवाब यह नहीं होगा कि मुझे एक किसान बनना है। वही भारत के बच्चें जिसके पूर्व में सभी किसान थे आज कोई भी किसान बनने के लिए तैयार नहीं होता है। आगे जाकर हम यह सुनना न पड़े कि कोई भी बच्चा हमसे "कौन है किसान" "कौन

है, कर्षक?", क्या है खेती" आदी सवाल पूछे। इस हालत के तरफ बढ़ रहा है हमारी शमाज।

खेती क्यूँ खायब हो रहा है?

यह एक ऐसा सवाल है जो हम सब खुद से पूछना चाहिए। "खेती क्यू खायब हो रहा है"? इसको जवाब हम अगर देखें तो हमें हि पता चल सकता है।

1. संस्कृति से दूर होते बच्चों। - यह एक ऐसा समस्य है जिसके तरफ हमें अपना ध्यान देना चाहिए। आज कल के बच्चों को खेती और खेती करने के तरीके, खेती के गुण आदी के बारे में कुछ नहीं पता है। वह लोग सिर्फ अपने पुस्तक

के अंदर के चीजों को पढ़ता है और अच्छे अंग लेता है। उन लोगो से अगर कुछ सवाल अपने संस्कृती और खेती के बारे में पूछे तो जवाब नही होगा।

किसानों से बुरे व्यवहार करना। - हमारे समाज आज भी ऐसा कई लोग है जो किसानों से बुरे व्यवहार करते है। जिन्हे किसानों की अहमियत नही पता हो ऐसे लोग अपने बच्चों को भि खेती के तरफ बढ़ने नही देता। ऐसे लोगों के कारण हमारे समाज में किसानों के संख्या कम होती जा रही है। इसके कारण खेती भी कम हो रहा है।

सींचाई की कमी - बदलते वातावरण के कारण पानी हमारे देश में कम होती जा रही है और इसके कारण

खेती करना बहुत महँगा पड़ रहा है इस में लोग खेती को छोड़ रहा है।

पैसों के लिए - केरल के हि स्तिथि अगर हम देखें तो रपट के अनुसार हमारे राज्य में करीब 60% ~~चावल~~ जगहों में खेती करता थी लेकिन आज के स्तिथि में वह सिर्फ और सिर्फ 15% हि है और वैज्ञानिक कहते है कि यह और कम हो जायगी। इस में खेती ~~हमारे~~ हि राज्य चली जा रही है।

~~ध~~ किसानों को मदद न मिलने के कारण - किसानों को आज के समाज बहुत कम हि लोगों से मदद मिल रहा है। इसके कारण भी खेती कम होती जा रही है

खेती और स्वास्थ्य

पौराणिक काल में हम देखे तो लोगों को बिमारी बहुत कम होती थी क्यों कि वह लोगों कामा करके मिट्टी में काम करके अपनी खाने के चीज़ इकट्ठा करता था और खाता था। लेकिन आज कोई भी लोग ऐसा नहीं करता और इसके कारण हमारे समाज में बीमारी भी बढ़ रही है। लोग कई तरह की जीवनशैय रोग की शिकार बनती आ रही है। इस में से कुछ है कैन्सर, प्रमेह, हृदरोग आदी। रपट के अनुसार केरला के मलबार कैन्सर सेन्टर में प्रतिदिन करीब चार सौ नया लोग आते है जिन्हें कैन्सर हो और इसका कारण भी बिमारी बदलते हुए

खाना और खेती के अभाव हि है। यु-एन-ओ ने 2028 मिल्लट वर्ष के नाम से मनाया था। क्यू ? जवाब है खेती का महत्व समझाने के लिए। जब खेती खया तब बीमारी आया।

पुवकों की भूमिका।

"युव वह होना चाहिए
जिसके पैरों में गति हो
हृदय में विनय हो और
आखों में चमक हो"
स्वामी विवेकानन्दन

"एक देश का भाविष्य वहाँ के युव ~~करता~~ है के हाथों में है" ऐसा जवहरलाल नेहरू ने कहा था। हम हि हैं जो खेती को हमारी

समाज में वापस ला सकता है। हम क्या कर सकते है"

- किसानों के मदद करना
- बच्चों को सिखाना
- यु-फेन आदी आयोजन का साथ देना
- सब को सिखाना कि खेती एक महत्वपूर्ण काम है।
- भविष्य के लिए खुद खेती का संरक्षण करना।
- किसानों के सारे योजनाएँ उनके सारे संकटों का साथ देना।
- यह चिंता अपने अंदर डालना है कि "अगर खेती और किसान नही तो हम नहीं"
- हम है इस देश का भविष्य

Item Code: 645 Participant Code: 380

अगर हम चाहें तो खेती को मिटा सकते हैं और खेती को बचा भी सकते हैं।

निष्कर्ष

भारत एक ऐसा देश जहाँ हर पच्चास कि.मी चलते ही पूरा देश बदल जाता है। एक ऐसा देश जहाँ सब दूसरों के लिए जीता है। एक ऐसा देश जहाँ हर रूप रंग दिखाई देता है। एक ऐसा देश जहाँ हर शहर की खाना दिखाई देता है। इस देश की संस्कृति हमारी संस्कृती है और खेती भी हमारी संस्कृती है" इसका संरक्षण करना हमारा उत्तरदायित्व है। पाश्चिमी संस्कृति से प्रभावित होकर हम अपनी संस्कृति को छोड़ रहा है आज। वहाँ की खान-पान वेशभूषा

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

सब अपना रहा है। इस अवसर पर हमारे समाज में बीमारी भी बढ़ रहा है और हम अपनी संस्कृती से दूर होती जा रहा है। ऐसे एक अवसर पर हमें बस यह समझना चाहिए कि उनका संस्कृति उनका है और हमारा संस्कृति हमारा है और खेती इसमें सबसे जरूरी है। इस लिए हमें खेती की तरफ बढ़ना चाहिए। खेती को बचाना चाहिए अपनी संस्कृति को बचाना चाहिए"

"कर्मण्ये वादका रस्ते मा फलेषु कदाचन"

- महाभारत

हम अपना काम करें बिना फल के बारे में सोचे। हम अपनी संस्कृति और खेती को ~~बचाने~~ संरक्षण करने की काम करें बिना उसके फल के बारे में सोचे।